जहाँ जो परम्परा चल रही है ...?

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, राष्ट्रीय अध्यक्ष,
अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद्

दिगम्बर जैन समाज की एकता के लिये यह परम आवश्यक है कि पूजनपद्धति के सन्दर्भ में जहाँ जो तेरापंथी या बीसपंथी परम्परा चली आ रही है; आगे भी वहीं चलती रहे, उसमें किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं किया जाय। इस बात को समाज के सभी नेतृवर्ग ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया है।

दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मलकुमारजी सेठी जब लन्दन में मुझसे मिले तो उनकी जबान पर पहला यही सवाल था कि पूजा पद्धति आदि की जहाँ जो परम्परा चल रही है, वहाँ वही चले; उसमें किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन न किया जाय ह्न क्या आप इस बात से सहमत हैं?

उनके प्रश्न के उत्तर में जब मैंने उनसे कहा कि हम इस बात से पूरी तरह सहमत हैं तो वे उछल पड़े और बड़े ही उत्साह से कहने लगे कि अब हमारी और आपकी एकता के मार्ग की आधी बाधायें तो दूर हो ही गई हैं। उक्त सन्दर्भ में समाज के जिन-जिन कर्णधारों से बात हुई; सभी ने यही मत व्यक्त किया।

ऐसी वैचारिक पृष्ठभूमि में यदि बावनगजा (बड़वानी) में होने वाले महामस्तकाभिषेक के सन्दर्भ में विचार करें तो कोई कारण नहीं है कि हम वहाँ चली आ रही परम्परा में किसी प्रकार का बदलाव करें।

पत्रों में प्रकाशित समाचारों से जब समाज को यह पता चला कि वहाँ पंचामृत अभिषेक होगा तो समाज में खलबली मच गई; क्योंकि अब तक वहाँ की परम्परा तेरापंथानुसार जलाभिषेक करने की ही रही है।

इन्दौर या उसके आस-पास की समाज में यह बात बहुत जोरों से फैल रही है कि यदि सर सेठ हुकमचन्दजी साहब होते तो यह किसी भी रूप में संभव नहीं था।

हमारे पास अनेक लोगों के पत्र आ रहे हैं; जिनमें उक्त सन्दर्भ में हमारे विचार जानने का प्रयत्न किया गया है और इस दिशा में कुछ करने का आग्रह भी किया गया है। यद्यपि हमारी नीति तो यह है कि हम समाज के या तीर्थों के मामलों में अनावश्यक रूप से कहीं न उलझें; तथापि उक्त संदर्भ में समाज के सभी कर्णधारों से विनम्र अनुरोध करना

(शेष पृष्ठ : 27 पर ...)

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 26 294 अंक : 6

धिक ! धिक ! जीवन समकित बिना...

दान शील तप व्रत श्रुत पूजा, आतम हेत न एक गिना।
धिक ! धिक ! जीवन समकित बिना ।।1।।

ज्यों बिनु कन्त कामिनी शोभा, अंबुज बिनु सरवर सूना।
जैसे बिना एकड़े बिन्दी, त्यों समकित बिन सरब गुना ।।
धिक ! धिक ! जीवन समकित बिना ।।2।।

जैसे भूप बिना सब सेना, नींव बिना मन्दिर चुनना।
जैसे चन्द बिहूनी रजनी, इन्हैं आदि जानो निपुना।।
धिक ! धिक ! जीवन समकित बिना ।।3।।

देव जिनेन्द्र साधु-गुरु करुना धर्म राग व्योहार भना।
निहचै देव धरम गुरु आतम,'द्यानत' गहि मन वचन तना।।
धिक ! धिक ! जीवन समकित बिना ।।4।।

* * *

पराश्रय से संसार, स्वाश्रय से मुक्ति

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दिस्वामी के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 45 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

परः परस्ततो दुःखमात्मैवात्मा ततः सुखम्।
अत एव महात्मानस्तन्निमित्तं कृतोद्यमाः ।।45।।

पर तो पर ही है, उसके लक्ष्य से दुःख होता है तथा आत्मा, आत्मा ही है, उसके लक्ष्य से सुख होता है। इसलिये सर्व महात्माओं ने आत्मा के लिये ही उद्यम किया है।

(गतांक से आगे ...)

शरीरादि प्रत्येक पदार्थ तो जड़ ही है, उन्हें किसी भी प्रकार से चेतन नहीं बनाया जा सकता अथवा आत्मा के समान भी नहीं बनाया जा सकता; फिर भी अज्ञानी जीव पर को अपना मानता है, इसलिए दुःखी होता है। आत्मा का आश्रय करने से ही सुख है तथा पर का आश्रय करने से ही दुःख है।

स्वयं के शुद्ध चैतन्य निजस्वभाव पर लक्ष्य करने से विशेष शुद्धि प्रकट होती है, वह सुखरूप है तथा परपदार्थ में जितना लक्ष्य जाता है, उतने शुभाशुभ भाव होते हैं, वे दुःखरूप हैं; क्योंकि दुःख के कारणों की प्रवृत्ति पर पदार्थों की ओर दृष्टि जाने पर ही होती है।

भगवान आत्मा प्रत्येक समय शुद्ध ध्रुव परमात्मस्वरूप है, उसके आश्रय से पर्याय में संवर-निर्जरा प्रकट होते हैं, वे सुखरूप हैं तथा स्व-स्वरूप का लक्ष्य छूटकर जितना परलक्ष्य होता है, उसमें दया-दानादि शुभभाव अथवा उपदेश देने का राग ह्न यह सब दुःख की प्रवृत्ति है।

स्वभाव का आश्रय लेना ही एकमात्र शुद्धि का उपाय है। उसके स्थान पर व्रत, तप, जप, दया, दान या उपदेश देने के शुभभाव को कोई शुद्धि का उपाय मान ले तो वह मिथ्यादृष्टि है। परद्रव्य के लक्ष्य से जो राग होता है, वह दुःख का ही कारण

है। दूसरे को उपदेश देने से दूसरे को तो लाभ होगा; साथ ही मेरे ज्ञान की भी वृद्धि होगी ह्न ऐसी मान्यता तो मिथ्यादृष्टि का व्यामोह है। परद्रव्य के लक्ष्य से होनेवाला तीर्थंकर प्रकृति के योग्य भाव भी दु:खरूप है, दु:ख का कारण है।

यह तो कुछ अलग ही बात है। अंतर स्वभाव के आश्रय से जितनी एकाग्रता करे, उतना लाभ है तथा परलक्ष्य से जितने विकल्प उठें, उतना अहित है; फिर वह विकल्प भले ही ऊँचे से ऊँचे शुभभाव का ही क्यों न हो, है तो वह दु:खरूप ही, संयोगी वस्तु के मिलाने का ही कारण है; स्वभाव के मिलाने में समर्थ नहीं है।

भगवान आत्मा ज्ञायक शुद्ध चैतन्य पिण्ड है, वह कभी तीर्थंकर गोत्र के योग्य शुभभावरूप भी नहीं हुआ। आत्मा त्रिकाल आत्मरूप से ही रहता है, वह कभी शुभाशुभ भावरूप ही नहीं हुआ तो देहादिस्वरूप कहाँ से होगा ?

लोगों की मान्यता ऐसी हो गई है कि स्वयं शास्त्र सीखकर दूसरों को सिखाएँ तो अपने को लाभ होता है; परन्तु इसमें तो परावलम्बी ज्ञान से लाभ मानने का प्रसंग आता है। भाई ! तेरी दृष्टि ही मिथ्या हो गई है। जिसे शुभ विकल्प की महिमा आए, उसे निर्विकल्प ध्यान की महिमा कहाँ से आयेगी ? इष्टोपदेश में यह सब स्पष्ट कर रहे हैं।

बात सूक्ष्म है; परन्तु मूल बात यही है। स्वभाव के लक्ष्य से सुख है और परद्रव्य के लक्ष्य से दु:ख है। अपना आत्मा दु:ख का कारण नहीं है, दु:ख का विषय नहीं है; अपितु वह तो सुख का कारण है, सुख का विषय है तथा थोड़ा भी परलक्ष्य हो तो वह दु:खरूप है, दु:ख का कारण है। अरे ! प्रभावना के शुभभावरूप लक्ष्य से भी जीव बहुत बार व्यामोह-भ्रम में पड़ जाता है; क्योंकि पाँच-पचास हजार लोग प्रवचन सुनने आयें और वाह ! वाह ! करें वहाँ स्वयं को ऐसा लगता है कि मुझमें कुछ बात तो है, तभी तो इतने लोग तारीफ करते हैं। उसे कहना चाहिए कि ह्न अरे मूढ़ हो, भ्रम में पड़े हो।

भाई ! यह तो वीतरागता का मार्ग है। आत्मा वीतराग स्वरूप से विराजमान है। उसका अंतर में आश्रय करने से जितनी शुद्धि प्रकट होती है, (शेष पृष्ठ : 30 पर ..)

कारण/कार्य परमाणु

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 25 वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

धाउचउक्कस्स पुणो जं हेऊ कारणं ति तं णेयो।
खंधाणं अवसाणं णादव्वो कज्जपरमाणु ॥25॥

पृथ्वी, जल, तेज और वायु ह्न इन 4 धातुओं के हेतु को कारणपरमाणु जानना। स्कन्धों के अवसान अर्थात् छूटे हुए अविभागी अंतिम अंश को कार्यपरमाणु जानना।

(गतांक से आगे)

अब 25 वीं गाथा की टीका पूर्ण करते हुये टीकाकार मुनिराज श्लोक द्वारा पुद्गल की उपेक्षा करके शुद्ध आत्मा की भावना करते हैं ह्न

स्कन्धैस्तै: षट्प्रकारै: किं चतुर्भिरणुभिर्मम।
आत्मानमक्षयं शुद्धं भावयामि मुहुर्मुहु: ॥39॥

उन छह प्रकार के स्कंध या चार प्रकार के अणुओं के साथ मेरा क्या सम्बंध है ? मैं तो अक्षय शुद्ध आत्मा को पुन:-पुन: भाता हूँ।

अहो ! इन स्कंधों या परमाणुओं के साथ मेरा कोई संबंध नहीं। कर्म शरीरादि स्कंधों का मुझे क्या काम है? शब्द, पुस्तक आदि के साथ मेरा क्या संबंध है ? मैं तो शुद्ध तथा अविनाशी आत्मा को भाता हूँ। हे आत्मा ! तुझसे भिन्न वस्तु से तुझे क्या प्रयोजन ? आत्मा की पर्याय में होनेवाले विकार के साथ भी तुझे क्या काम है ? तू तो शुद्ध अविनाशी है- इसकी भावना कर ! पर के साथ तेरा कुछ भी संबंध नहीं है।

तैजस, कार्मण, औदारिकादि सभी वर्गणाएँ रूपांतरित हो जाती हैं, इनमें क्षय लागू होता है, इसीलिए शरीरादि एकरूप नहीं रहते; यदि कोई अक्षय है, तो वह मैं ही हूँ। कर्म पलटकर अंगुली हो जाते हैं, अंगुली पलटकर राख हो जाती है, हीरा पलटकर कोयला हो जाता है और कोयला पलटकर हीरा हो जाता है। आत्मा के

सिवाय सभी परमाणु पलट जाते हैं। रुपया पलटकर विष्टा हो जाता है और विष्टा पलटकर रुपया हो जाता है; पर आत्मा तो एकरूप ही रहता है। ऐसे एकरूप रागादि रहित आत्मा को मैं बार-बार भाता हूँ ह्न यही धर्म है।

यह सिद्ध की बात नहीं; पर ज्ञानी की बात है। यहाँ तो मुनि कहते हैं कि सभी पुद्गल बार-बार दूसरा रूप धारण करते हैं; पर मैं तो बार-बार आत्मा को ध्याता हूँ। बहुत से लोग ऐसी समझ के बिना ही ध्यान में उतर जाते हैं तथा कितने ही क्रियाकांड में उतर गये हैं; पर इसे समझे बिना कल्याण हो ही नहीं सकता। अत: पात्रता प्रकट करके इसे गुरुगम से समझना चाहिये। ज्ञान का विषय तो आत्मा है, राग-द्वेष ज्ञान का विषय नहीं है; क्योंकि ज्ञान का लक्षण राग नहीं है और उसका लक्ष्य भी राग नहीं है; अत: ज्ञान का ध्येय आत्मा है। उस शुद्ध आत्मा को ज्ञानी बार-बार ध्याता है; विकल्प की भावना नहीं करता।

अब गाथा 26 में कहते हैं कि परमाणु कैसा है ? उसका स्वरूप क्या है ? यहाँ मूल द्रव्य की बात कही है। गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

अत्तादि अत्तमज्झं अत्तंतं णेव इंदियग्गेज्झं।
अविभागी जं दव्वं परमाणु तं वियाणाहि।।26।।

स्वयं ही जिसका आदि है, स्वयं ही जिसका मध्य है और स्वयं ही जिसका अंत है; अर्थात् जिसके आदि, मध्य और अंत में परमाणु का निजस्वरूप ही है, जो इन्द्रियों से ग्राह्य जानने में आने योग्य नहीं है और जो अविभागी है, वह परमाणु द्रव्य है ह्न ऐसा जानना।

यहाँ परमाणु का विशेष कथन करते हैं। जिसप्रकार सहज परम पारिणामिकभाव की विवक्षा का आश्रय करनेवाले सहज निश्चयनय की अपेक्षा से नित्य और अनित्य निगोद से लेकर सिद्धक्षेत्र पर्यन्त विद्यमान जीवों का निजस्वरूप से अच्युतपना कहा गया है; उसीप्रकार पंचमभाव की अपेक्षा से परमाणुद्रव्य का परमस्वभाव होने से परमाणु स्वयं ही अपनी परिणति का आदि है, स्वयं ही अपनी परिणति का मध्य है और स्वयं ही अपना अन्त भी है (अर्थात् आदि में भी स्वयं

ही, मध्य में भी स्वयं ही और अन्त में भी परमाणु स्वयं ही है, कभी निजस्वरूप से च्युत नहीं है)। जो ऐसा होने से, इन्द्रियज्ञानगोचर न होने से और पवन, अग्नि इत्यादि द्वारा नाश को प्राप्त न होने से अविभागी है, उसे हे शिष्य ! तू परमाणु जान।

यहाँ परमाणु द्रव्य की बात है। जैसे एक बालक के वर्ग में वह बालक आदि, मध्य व अंत में अकेला होता है, वैसे ही परमाणु के वर्ग में वह परमाणु भी आदि, मध्य व अंत में अकेला होता है। वह परमाणु इन्द्रियों से जानने में नहीं आता है तथा अविभागी होता है। आत्मा भी परमाणु के समान अछेद्य, अभेद्य एवं अविनाशी है।

यह अजीव अधिकार है। इसमें परमाणु का कथन चलता है। तीर्थंकर भगवान ने छह द्रव्य देखे हैं, वे सभी अतीन्द्रिय हैं। एक भी पदार्थ इन्द्रियग्राह्य नहीं है। जो स्थूल दिखता है, वह मूल द्रव्य नहीं है, वह तो पुद्गल की वैभाविक अवस्था है। मूल वस्तु तो परमाणु है और वह अतीन्द्रिय ज्ञान का विषय है। अतीन्द्रिय आत्मा का ज्ञान होने पर अन्य अतीन्द्रिय पदार्थों का यथार्थ ज्ञान होता है।

परमाणु अतीन्द्रिय है, वह उग्र अवधिज्ञान का विषय है और अवधिज्ञान सम्यग्दृष्टि को ही होता है। विभंगज्ञानी अर्थात् कुअवधिज्ञानी परमाणु को नहीं जानता। इससे यह निश्चित हुआ कि परमाणु का ज्ञान अवधिज्ञान बिना नहीं होता और अवधिज्ञान सम्यग्ज्ञान बिना नहीं होता और सम्यग्ज्ञान अतीन्द्रिय आत्मा के ज्ञान के बिना नहीं होता; अत: अतीन्द्रिय आत्मा का ज्ञान ही श्रेयस्कर है।

यहाँ अजीव अधिकार में अजीव का ज्ञान कराते हुए भी आचार्यदेव आत्मा की ही बात करते हैं। सम्यक् मति-श्रुतज्ञान परमाणु को नहीं जानते, पर अवधिज्ञान परमाणु को जानता है।

यहाँ परमाणु द्रव्य की बात है, पर्याय की बात नहीं। परमाणु के स्वभाव का कथन करने पर आत्मा के स्वभाव के साथ ही उसका मिलन होता है। निगोद से लेकर सिद्ध जीव पर्यंत जितने भी आत्मा हैं, उनको निश्चयदृष्टि से देखें तो उनमें से कोई भी वस्तुस्वभाव से च्युत नहीं हुआ है। पर्याय को गौण करके देखें तो उन जीवों को संसार-मोक्ष ही नहीं है। **(क्रमश:)**

छहढाला प्रवचन

नारकियों के दुःखों का विशेष कथन

तिल-तिल करें देह के खंड असुर भिड़ावें दुष्ट प्रचण्ड।
सिंधुनीर तें प्यास न जाय, तो पण एक न बूँद लहाय ।।११।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

नारकी जीव मार-काट करके एक-दूसरे को बहुत दुःख देते हैं। अरे, यहाँ मनुष्य में भी कैसी क्रूरता देखने में आती है, वैरवृत्ति से एक-दूसरे को गोली से उड़ा देते हैं, छर्रों से मार डालते हैं। एक आदमी को दूसरे आदमी से वैर था, परन्तु वह उसका कुछ नुकसान न कर सका, तो दूसरे ने पहले आदमी के खेत में जाकर उसके चार बड़े-बड़े बैलों के पैर कुल्हाड़े से काट डाले। अरे, कितना वैरभाव! कितनी क्रूरता? ऐसे ही नरक में जाकर वहाँ भी बैरबुद्धि से जीव एक-दूसरे को क्रूरता से मारते रहते हैं। इसप्रकार नरक में जीव दीर्घकाल तक महादुःख भोगता है। कठिनता से वहाँ से बाहर आता है, तो सब भूलकर फिर पाप करने लगता है, जिससे फिर असंख्य वर्षों तक नरक में जा पड़ता है।

कोई जीव ऐसा भी होता है कि असंख्य वर्षों के बाद नरक में से निकलकर बीच में मात्र अन्तर्मुहूर्त्त के लिए दूसरा भव धारण करले; फिर नरक में जाये और असंख्य वर्षों तक वहाँ के दुःख भोगे। मात्र अन्तर्मुहूर्त्त के लिये बाहर आया, इतने में ही ऐसा तीव्र संक्लेश परिणाम किया कि जिसके फल में फिर से नरक में जा पड़ा। देखो तो सही जीव के परिणामों की ताकत ! उलटे परिणामों से वह अन्तर्मुहूर्त्त में सातवीं नरक पहुँच जाये और सुलटे (शुद्ध) परिणामों से अन्तर्मुहूर्त्त में मोक्ष को भी साध ले, ऐसी परिणामों की ताकत है। कोई जीव नरक से निकलकर बीच में एक भव धारण करके फिर नरक में जाता है, वहाँ से निकलकर बीच में फिर दूसरा एक भव धारण करके फिर नरक में जाता है, इस तरह बीच में एक-एक अन्य भव धारण करता हुआ लगातार आठ बार तक नरक में जाता है और महान दुःख पाता है।

एकेन्द्रिय जीवों के तो उससे भी अनन्तगुना दुःख है, जिसको व्यक्त करने का साधन (भाषा वगैरह) भी उनके पास नहीं है; अपनी चेतना को ही वे खो बैठे हैं। नारकी जीव शरीर को कूट-कूट के तिल जैसे टुकड़े करके छिन्न-भिन्न कर देते हैं, क्योंकि जिसने आत्मा की अखंडता मिथ्यात्वादि पापों के द्वारा खंड-खंड कर दी है, उसको नरक में

शरीर भी ऐसा मिलता है कि जिसका खंड-खंड हो जाय। उसका शरीर खंडित होकर फिर जुड़ जाये तो भी वह मरता नहीं है और महान दुःख भोगता है। सिद्ध भगवान आत्मा में एकत्व के द्वारा अखंड आनन्द को भोगते हैं, जबकि नारकी जीव देह में एकत्वबुद्धि करके शरीर के खंड-खंड होने पर अनंत दुःख भोगते हैं। अनन्तगुण की आराधना का सुख अनन्त और अनन्त गुण की विराधना का दुःख भी अनन्त है।

सिद्ध भगवंतों का आनंद अनन्त है और वैसा का वैसा अनन्तकाल तक रहता है; अज्ञान से अपने ऐसे सुखस्वभाव को भूलकर जीव ने अनन्त दुःख पूर्व में भोगा। जो अपने अनन्त स्वभाव को भूलकर पर में सुख मानता है, वह जीव अनन्त प्रतिकूलतारूप दुःख भोगता है; कदाचित् किसी जीव को बाह्य में प्रतिकूलता न हो तो भी अन्दर में मोह से वह महान दुःखी है। बाहर की प्रतिकूलता तो निमित्त मात्र है, वास्तविक दुःख तो अपने मिथ्यात्वादि मोहभावों का ही है। निर्मोही जीव सदैव सुखी है। अपने मोह भाव से ही तुम दुःखी हो रहे हो; अतः हे भाई ! उस मोह को तुम छोड़ो और आत्मा का ज्ञान करो।

आत्मा के ज्ञान के बिना जीव ने नरक में जो दुःख भोगे, उसमें तृषा का दुःख कैसा हैह्न यह इस गाथा में दिखाया है; अब आगे की गाथा में भूख के दुःख को कहते हैं।

तीन लोक को नाज जु खाय, मिटे न भूख कणा न लहाय।
ये दुःख बहुसागर लों सहे, करम जोगतें नरगति लहे।।१२।।

'तीन लोक का अनाज खाने पर भी क्षुधा नहीं मिटे'ह्न इतनी तीव्र भूख नारकी जीव को होती है, परन्तु खाने को एक कण भी वहाँ नहीं मिलता; महान क्षुधा से वे पीड़ित रहते हैं। इसप्रकार नरक में भूमि संबंधी दुःख, वैतरणी सम्बन्धी दुःख, सेमरतरू के तलवार जैसे पत्ते के प्रहार से शरीर छिद जाये; उसका दुःख, अति तीव्र शीत उष्णता का दुःख, असुरकुमार देवों के द्वारा दिये जाने वाला त्रास, शरीर का छेदन-भेदन, असह्य क्षुधा-तृषा और ऐसे अनेक तरह के अन्य दुःख नरक में बहुत दीर्घकाल तक जीव को सहने पड़ते हैं। वे कम से कम दस हजार वर्ष से लेकर ३३ सागरोपम के असंख्यवर्ष तक ऐसे दुःख सहन करते हैं और वहाँ से निकलकर कदाचित् कोई शुभकर्म के योग से मनुष्यगति पाते हैं। नरक में से निकलकर कोई जीव तिर्यंच होते हैं और कोई मनुष्य होते हैं। कदाचित् मनुष्य हो तो भी आत्मज्ञान के अभाव में वे कैसे-कैसे दुःख सहन करते हैं? ह्न यह बात आगे की गाथाओं में कहेंगे। ●

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : स्त्री-पुत्रादि को लुटेरों की टोली मानने से घर में झगड़ा होता है ?

उत्तर : परद्रव्य को अपना मानने से ही अंदर में मिथ्यात्व का बड़ा झगड़ा होता है, जिससे चार गति का दु:ख भोग रहा है। कुटुम्बीजन स्वार्थ के सगे हैं, यह तो हकीकत है। अपने स्वार्थ-पोषण के लिये प्रेम करते हैं ह्न ऐसा समझकर अंदर से ममत्व छोड़ना है। यह तो अनादि का झगड़ा छुड़ाने की बात है। लोग 15 अगस्त को स्वतंत्रता-दिवस कहते हैं। पर से सुख की वांछारूप दीनता छोड़कर स्वभाव में सुख मानना ही सच्ची स्वतंत्रता है। उस अविनाशी स्वराज्य को भोगनेवाला सम्यग्दृष्टि धर्मात्मा है, वही सच्चा राजा है। बाह्य राज्य को भोगनेवाला राजा तो पर से सुख लेने की आकुलता की ज्वाला को भोगता है, आत्मशांति को नहीं।

प्रश्न : श्री वादिराज मुनिराज का कुष्ठरोग स्तुति करते ही मिट गया, मानतुंगाचार्यदेव के कारागार के ताले स्तुति करने से टूट गये, सीताजी के निर्दोष शील से अग्नि भी जलरूप हो गई ह्न ऐसा कथन शास्त्र में आता है ह्न इससे हम क्या समझें ?

उत्तर : पूर्व के पुण्य के योग से वादिराज मुनि का कुष्ठ मिट गया, मानतुंगाचार्य के ताले टूट गये और सीताजी का अग्निकुण्ड भी जलसरोवर बन गया; तब उस पुण्योदय का आरोप वर्तमान प्रभु-भक्ति और ब्रह्मचर्य आदि पर करने में आया ह्न ऐसी प्रथमानुयोग की कथन पद्धति है ह्न उसे यथावत् समझना चाहिए। मोक्षमार्ग प्रकाशक में पण्डित टोडरमलजी ने इसका विशेष स्पष्टीकरण किया है, वहाँ से देख लेना।

प्रश्न : द्रव्यानुयोग का पक्षपाती निश्चयाभासी हो सकता है क्या ?

उत्तर : हाँ, निश्चय का ज्ञान तो करले और अनुभव न करे तथा अपने को अनुभवी मान बैठे तो वह निश्चयाभासी है।

प्रश्न : मनुष्य का कर्त्तव्य क्या ? मानवधर्म क्या ? कृपया बतलाइये ?

उत्तर : अरे भाई ! सर्वप्रथम तो मैं मनुष्य हूँ ह्न ऐसी मान्यता ही महान भ्रम है। मनुष्यपना तो संयोगी पर्याय है, जीव-पुद्गल के संयोगरूप असमान जातीय पर्याय है,

आत्मा का स्वरूप तो नहीं। अत: मनुष्य पर्याय वह मैं नहीं, मैं तो ज्ञानस्वरूप आत्मा हूँ ह्न ऐसा समझना, यही सबसे प्रथम कर्त्तव्य है ह्न धर्म है। मनुष्यभव प्राप्त करके यदि कुछ करने योग्य है, तो यही है। इसके विपरीत मैं मनुष्य ही हूँ ह्न ऐसा मानकर जो कुछ भी क्रियाकलाप करने में आता है, वह सब व्यवहारमूढ़ अज्ञानीजीवों का व्यवहार है।

प्रश्न : पैसा-वैभवादि में आकर्षणशक्ति बहुत प्रतीत होती है ?

उत्तर : पैसा-वैभवादि में आकर्षणशक्ति कुछ है ही नहीं, यह तो जीव के मोह की मूर्खता है ह्न पागलपन है। पर में मोह करके अपना भव बिगाड़कर चौरासी के भ्रमण में चला जाता है।

प्रश्न : अब तक अनन्तकाल में भी आत्मा को समझा नहीं तो अब कैसे समझ में आ जायेगा ?

उत्तर : अनन्तकाल में नहीं समझ पाया तो इसका अर्थ यह थोड़े ही है कि कभी समझ में आयेगा ही नहीं। क्या समझ-शक्ति नष्ट हो गयी है ? जैसे पानी अग्नि के निमित्त से सौ वर्ष तक ऊष्ण बना रहे तो क्या उसका शीतल स्वभाव नष्ट हो गया है ? यदि चूल्हे पर रखी हुई तपेली का ऊष्ण जल अग्नि के ऊपर गिर पड़े तो तत्समय भी वह अग्निनाशक स्वभाववाला ही है। वैसे ही अनन्तकाल से विपरीत रुचि के कारण आत्मा को नहीं समझा, परन्तु अब यदि रुचि गुलाँट मारे तो क्षणमात्र में आत्मा समझ में आ सकता है और तेरा कल्याण हो सकता है।

(जहाँ जो परम्परा..., पृष्ठ : 4 का शेष...)

चाहते हैं कि समय रहते ऐसा कुछ करें कि हमारा यह तीर्थराज और उसके महामस्तकाभिषेक का यह मंगल अवसर दिगम्बर समाज में बिखराव लाने का हेतु न बने, कटुता उत्पन्न करने का प्रसंग न बने।

जल से अभिषेक करने में तो किसी को कोई परहेज होता ही नहीं है; अतः सभी समाज भगवान का जलाभिषेक कर अपने जीवन को सफल व सार्थक करें तो वातावरण में जो पवित्रता रहेगी, वह अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि समय रहते हम सब किसी न किसी ऐसे सर्वसम्मत निर्णय पर अवश्य पहुँच जायेंगे कि जिसमें किसी एक भी व्यक्ति को मानसिक आघात न पहुँचे और यह काम पूरी सफलता के साथ निर्विघ्न सम्पन्न हो जावें ह्न इस पवित्र भावना से विराम लेता हूँ। ●

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

अहमदाबाद (वस्त्रापुर) : यहाँ दिनांक 20 से 26 नवम्बर, 2007 तक नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के ग्रंथाधिराज समयसार के सार पर हुए मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित मीठालाल दोशी हिम्मतनगर, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर के विविध विषयों पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

दीक्षा कल्याणक के प्रसंग पर पण्डित हेमंतभाई गाँधी के प्रवचन का लाभ भी मिला। मुनिराज नेमिनाथ को प्रथम आहार देने का सौभाग्य श्री निमेषभाई हितेनभाई शाह एवं अनंतरायभाई शेठ परिवार को मिला ।

नेमिकुमार के **माता-पिता** बनने का सौभाग्य श्रीमती चंपाबेन व पण्डित चंदूलाल मेहता को मिला। **सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी** श्री अश्विनभाई कोटड़िया व श्रीमती जागृतिबेन कोटड़िया, **कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी** श्री निखिलकुमार मेहता व श्रीमती जिज्ञाबेन मेहता थे।

प्रतिष्ठा महोत्सव के सम्पूर्ण कार्यक्रम प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुये। सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, पण्डित मधुकरजी जलगांव, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिंदवाड़ा थे।

इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शृंखला में कुन्दकुन्द का वैराग्य, सौराष्ट्र के नवरत्न एवं विराधना का फल आदि नाटकों के साथ अन्य अनेक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गई।

महामहोत्सव में श्री अमृतलाल चुन्नीलाल मेहता, श्री रमेशचन्द वाडीलाल शाह, श्री रजनीभाई मीठालाल दोशी, श्री निखिलभाई जशवंतलाल मेहता, श्री अश्विनभाई हेमंतभाई परिवार, श्री सतीषकुमार मेहता, श्री राजेशभाई नानुभाई जवेरी, श्री सेवंतीलाल अमृतलाल गांधी, श्री मीठालाल मगनलाल दोशी, श्री नवनीतकुमार चंदुलाल घडिया, श्री दिलीपभाई जयंतिलाल शाह आदि का सक्रिय सराहनीय योगदान रहा।

इस अवसर पर लगभग 33 हजार 500 रुपये का सत्साहित्य तथा 9हजार 750 घंटों के सी.डी.प्रवचन घर-घर पहुँचे।

मुकुन्दभाई खारा का अभिनन्दन

देवलाली : यहाँ दीपावली के अवसर पर आयोजित शिविर के दौरान पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली एवं श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल मुम्बई के तत्त्वावधान में दिनांक 7 नवम्बर को मुमुक्षु समाज के जाने-पहिचाने सक्रिय कार्यकर्त्ता, गुरुदेवश्री द्वारा प्रसारित तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में तन-मन-धन से सक्रिय योगदान देनेवाले 83 वर्षीय श्री मुकुन्दभाई मणिलाल खारा का सार्वजनिक अभिनन्दन एवं सम्मान समारोह स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट सोनगढ के ट्रस्टी चिमनभाई ठाकरसी मोदी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह अवसर सर्वाधिक प्रसन्नता का इसलिये है क्योंकि सोनगढ़ ट्रस्ट के ट्रस्टी चिमनभाई ठाकरसी की अध्यक्षता में आदरणीय मुकुन्दभाई का सम्मान होने जा रहा है। मुझे उस दिन की प्रतीक्षा है जब सोनगढ़ में मुकुन्दभाई की अध्यक्षता में चिमनभाई ठाकरसी मोदी का सम्मान होगा और उसमें हम सब उपस्थित होंगे। चिमनभाई एवं मुकुन्दभाई ने अनेक दशाब्दियों तक कंधे से कंधा मिलाकर काम किया है, कुछ दिन से हुये बिछोह को आज फिर हम एक स्टेज पर देख रहे हैं। यह हमारे मुमुक्षु समाज की एकता के लिये मील का पत्थर साबित होगा।

श्री मुकुन्दभाई खारा का मुमुक्षु समाज की देश-विदेश में कार्यरत प्रमुख 40 विभिन्न संस्थाओं ने स्मृति चिन्ह, शॉल, श्रीफल आदि भेंटकर सम्मान किया साथ ही सर्वश्री कांतिभाई मोटानी, भरतभाई, बीनूभाई, उल्लासभाई, सुरेशभाई, प्रकाशभाई एवं ब्रह्मचारी बहिनों ने भी श्री मुकुन्दभाई खारा का सम्मान किया।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री हसमुखभाई वोरा, ट्रस्टी श्री जीतूभाई बी.शाह सोनगढ़ के साथ ही श्री नेमिशभाई शाह, श्री अनंतराय ए. सेठ, श्री अतुलभाई खारा अमेरिका, श्री रसिकभाई डगली, श्री बसंतभाई एम. दोशी, श्री नगिनभाई मुम्बई, श्री प्रवीणभाई वोरा मुम्बई, श्री सुमनभाई आर.दोशी राजकोट, कविवर राजमलजी पवैया, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' भोपाल, श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया अजमेर, श्री विपिनभाई वाघर जामनगर, श्री अशोक बड़जात्या इन्दौर, श्री प्रभाकरभाई कामदार इटली, श्री संदीपभाई लक्ष्मीचंदभाई लंदन, श्री अमृतभाई फतेपुर आदि विशिष्ट अतिथि मौजूद थे।

इस अवसर पर आदरणीय युगलजी कोटा, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, विमलकुमारजी दिल्ली, पवनकुमारजी अलीगढ, प्रदीपजी झांझरी उज्जैन इत्यादि अनेक महानुभावों के शुभकामना संदेश भी प्राप्त हुये। कार्यक्रम का संचालन श्री कान्तीभाई मोटाणी मुम्बई एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने किया। आभार प्रदर्शन श्री अतुलभाई खारा, डलास (यू.एस.ए) ने किया।

त्रिदिवसीय विधान का आयोजन

दिल्ली : यहाँ अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र में भगवान महावीर स्वामी के 2534 वें निर्वाण महोत्सव पर 9 से 11 नवम्बर, 07 तक त्रिदिवसीय विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर आयोजित श्री महावीर पंचकल्याणक विधान पण्डित कांतिकुमारजी जैन इन्दौर, पण्डित संजीवजी जैन उस्मानपुर एवं पण्डित सन्मतिजी जैन पिड़ावा के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। मंगल कलश स्थापना श्री पूनमचंदजी नरेशकुमारजी लुहाड़िया सफदरजंग एन्क्लेव द्वारा की गई।

आयोजन में डॉ.दीपकजी जैन जयपुर, विदुषी श्रीमती राजकुमारीजी जैन जयपुर, पण्डित श्री राकेशजी शास्त्री नांगलोई, पण्डित श्री ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर एवं श्री संदीपजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ भी मिला।

सम्पूर्ण कार्यक्रम बाल ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री एवं पण्डित संदीपजी शास्त्री बाँसवाड़ा के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

(इष्टोपदेश प्रवचन, पृष्ठ : 20 का शेष...)

उतना लाभ है। अन्य जितने शुभ विकल्प हैं, वे आत्मा को लाभरूप तो है ही नहीं; पर लाभ में मददरूप भी नहीं है।

श्रोता : आपके जैसे गुरु ही ऐसी बात कर सकते है ?

यह देखो ना ! पूज्यपादस्वामी कैसी अद्भुत बात कहते हैं। एक ही श्लोक में सबका सार बता दिया है। समस्त पर वस्तुओं का लक्ष्य दु:खरूप है और स्व-स्वरूप सुखरूप है। यह तो पूज्यपादस्वामी द्वारा भगवान के पास से आयी हुई बात है।

शरीर, वाणी, मन से रहित शुद्ध आत्मा ही सुखरूप है, उसके आश्रय से पर्याय में जितनी शुद्धि प्रकट होती है, उतना ही लाभ होता है और पर के लक्ष्य से जो विकल्प उठते हैं, उन सब विकल्पों से दु:ख होता है।

कुन्दकुन्द आचार्यदेव ने मोक्षाधिकार में कहा है ह्न **'परदव्वाओ दुग्गई, सद्दव्वाओ सुग्गई।'** स्वद्रव्य के आश्रय से सुगति-शुद्ध परिणमन होता है तथा परद्रव्य के आश्रय से दुर्गति-अशुद्ध परिणमन होता है। परद्रव्य के रूप में भले ही सामने साक्षात् त्रिलोकीनाथ विराजते हों; पर उनकी ओर भी लक्ष जाने पर विकल्प ही होते हैं और विकल्पमात्र ही दु:खरूप है। **(क्रमश:)**

शिविर सानन्द सम्पन्न

विदिशा (म. प्र.) : यहाँ श्री शीतलनाथ दिगम्बर जैन बड़े मंदिर में श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं मंदिर ट्रस्ट विदिशा के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 14 से 19 अक्टूबर, 07 तक आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, ब्र. हेमचंदजी हेम देवलाली, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ़, पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इंदौर, पण्डित अरहंतप्रकाशजी उज्जैन, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित नागेशजी पिड़ावा, पण्डित शांतिलालजी महिदपुर, पण्डित मधुकरजी जलगांव, श्रीमती हीराबाईजी इन्दौर, ब्र. सुकुमालजी, ब्र. पुष्पलताजी, ब्र. ज्ञानधाराजी, ब्र.समताजी झांझरी उज्जैन के साथ ही स्थानीय विद्वान पण्डित जवाहरलालजी, पण्डित कस्तूरचंदजी, पण्डित शिखरचंदजी, पण्डित लालजीरामजी, पण्डित नंदकिशोरजी, डॉ. आर. के. जैन, ब्र. अमितजी मोदी, डॉ. विनोद चिन्मय, डॉ. मुकेश तन्मय, डॉ. विद्यानंदजी, डॉ. सरस जैन, डॉ. राजेशजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

सत्साहित्य नि:शुल्क मंगायें

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित प्रवचनसार अनुशीलन भाग-1, पृष्ठ-446, कीमत-35 रुपये और प्रवचनसार अनुशीलन भाग-2, पृष्ठ-475, कीमत-35 रुपये; का नि:शुल्क वितरण स्व. प्रफुल्लचंद केशवलाल दोशी की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नलिनी प्रफुल्लचंद दोशी एवं उनके सुपुत्र श्री संजयभाई दोशी एवं रूपेनभाई दोशी परिवार की ओर से साधर्मीभाई-बहिनों, ब्रह्मचारियों, त्यागियों, मंदिरों, वाचनालयों हेतु किया जा रहा है।

इच्छुक महानुभव 15/- रुपये के फ्रेश डाक टिकिट निम्नलिखित पते पर भेजकर पुस्तकें मंगा लेवें। ध्यान रहे टिकिट भेजने की अंतिम तारीख **31 जनवरी 2008** है।

ह्न नि:शुल्क साहित्य वितरण विभाग, श्री टोडरमल स्मारक भवन
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

30 व 31 दिसम्बर	**पौन्नूर हिल**	**शिविर**
1 से 8 जनवरी, 08	**चेन्नई**	**व्याख्यानमाला**
14 जनवरी, 08	**शिवपुरी**	**कलशारोहण**
15 से 20 जनवरी, 08	**बदरवास-शिवपुरी**	**पंचकल्याणक**
28 से 30 जनवरी, 08	**बावनगजा**	**मस्तकाभिषेक**
1 से 3 फरवरी, 08	**मंगलायतन**	**वार्षिकोत्सव**
5 से 11 फरवरी, 08	**द्रोणगिरि**	**पंचकल्याणक**

पाठकों के पत्र...

काफी उत्साह आया !

आचार्य कुन्दकुन्द विरचित ग्रंथराज समयसार पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित ज्ञायकभाव प्रबोधिनी टीका को पढ़कर **खनियांधाना से पं. संजयजी** पुजारी लिखते हैं कि ह्न

''वर्तमान में मैं ज्ञायकभाव प्रबोधिनी टीका के माध्यम से समयसार ग्रंथ का स्वाध्याय कर रहा हूँ, बहुत आनन्द आ रहा है। पूर्व में हालंकि जयचंदजी छाबड़ा द्वारा लिखित टीका के माध्यम से भी स्वाध्याय किया, पर स्वयं की ही कमजोरी कहें कि बात ख्याल में तो आयी, पर स्पष्ट न हो सकी थी; पर अब पढ़ने में काफी उत्साह आता है एवं बात भी काफी स्पष्ट होती जा रही है।

मैंने अभी बीच के प्रकरण से बढ़कर सीधे 47 शक्तियों के स्वरूप को देखा, वह भी पूरी तरह से स्पष्ट हुआ है। इस हेतु मैं आपके प्रति कृतज्ञ हूँ।''

वैराग्य समाचार

1.**कोटा निवासी श्री अरिदमनलालजी जैन** का दिनांक 6 नवम्बर, 07 को 85 वर्ष की आयु में शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आप लगभग 35 वर्षों तक दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल कोटा के अध्यक्ष रहे। आप तत्त्व के लिये समर्पित सक्रिय कार्यकर्ता के साथ-साथ गहन तत्त्वाभ्यासी भी थे। देहावसान के पूर्व आपको घर पर ही आदरणीय जुगलकिशोरजी 'युगल' का मार्मिक उद्बोधन भी प्राप्त हुआ। आपके निधन से मुमुक्षु समाज कोटा को एक अपूरणीय क्षति हुई है। आपकी स्मृति में आपके परिवार की ओर से जैनपथप्रदर्शक, वीतराग-विज्ञान एवं टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को कुल 1001/-रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

2. महाविद्यालय के स्नातक डॉ. योगेशचन्दजी जैन की मातुश्री **श्रीमती प्रकाशवती जैन** ध.प. स्व.वैद्य गम्भीरचन्दजी जैन का दिनांक 16 नवम्बर, 07 को 83 वर्ष की आयु में समाधिपूर्वक शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आप धार्मिक एवं स्वाध्यायप्रिय महिला थीं। जयपुर में आयोजित होनेवाले शिविरों में आपकी उपस्थिति रहती थी। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 100/- रुपये प्राप्त हुये।

3. **वहन्नूर (महा.) निवासी श्री सुरेन्द्रबन्डूजी चौगुले** का दिनांक 3 दिसम्बर, 07 को 75 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप अनेक वर्षों से सर्वोदय स्वाध्याय समिति, कोल्हापुर के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। आपकी प्रेरणा से आपका सुपौत्र **संदीप चौगुले** वर्तमान में टोडरमल महाविद्यालय, जयपुर में अध्ययनरत है। आपकी स्मृति में जैनपथ प्रदर्शक व वीतराग-विज्ञान को कुल 200/- रुपये की राशि प्राप्त हुई है।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही निर्वाण को प्राप्त हो ह्न यही भावना है।

सिद्धचक्र मंडल विधान सम्पन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ चौक बाजार स्थित जैन मंदिर में दिनांक 9 से 16 दिसम्बर, 07 तक श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन रात्रि में ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के ग्रंथाधिराज समयसार की ग्यारहवीं गाथा पर मार्मिक प्रवचनों के साथ ही पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के सारगर्भित प्रवचन हुये। आपके प्रवचनों से पूर्व ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र.जतीशचंदजीके निर्देशन में पण्डित सुनीलजी'धवल' भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर एवं पण्डित प्रयंककुमारजी शास्त्री रहली ने सम्पन्न कराए।

प्रतिदिन दोपहर में पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा के समयसार पर हुए व्याख्यान हुये। सायंकाल जिनेन्द्र-भक्ति के उपरान्त ब्र. समताबेन उज्जैन द्वारा देव-शास्त्र-गुरु पूजन (युगलजी कृत) की जयमाला के आधार से कक्षा ली गई।

डॉ. भारिल्ल विद्यासागर इंस्टीट्यूट में ...

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 8 दिसम्बर, 07 को विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट में एम.बी.ए. एवं बी.बी.ए. के विद्यार्थियों के लिये डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का **'मैं स्वयं भगवान हूँ'** विषय पर मार्मिक प्रवचन हुआ, जिसे सभी विद्यार्थियों ने मंत्रमुग्ध होकर सुना। इसी प्रसंग पर ब्र. हेमचन्दजी हेम के अंग्रेजी भाषा में उद्बोधन का लाभ भी मिला।

इस अवसर पर यू.एस.ए. से डॉ. नवीनचन्दजी एवं अशोकजी सेठी के अतिरिक्त श्री विमुक्त जैन बैंगलौर, ए.के. जैन एवं संस्थान के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री सुरेशचन्द जैन आदि उपस्थित थे।

जैन आचार मीमांसा पर संगोष्ठी

नई दिल्ली : श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 22 नवम्बर, 07 को **जैन आचार मीमांसा** विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में जैन दर्शन विभाग के अध्यक्ष डॉ. वीरसागर जैन ने कहा कि जैनधर्म में आचार पक्ष पर अधिक बल दिया है।इसके साथ ही वरिष्ठ अध्यापक डॉ. अनेकान्त जैन ने श्रावक के व्रतों व ग्यारह प्रतिमाओं पर विचार प्रस्तुत किये।

संगोष्ठी में जैन आचार साहित्य की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसमें श्रावकाचार संग्रह तथा मूलाचार आदि ग्रंथों को सभी के अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया गया। सभा की अध्यक्षता करते हुए न्यायदर्शन विभाग के अध्यक्ष प्रो.पीयूषकान्त दीक्षित ने कहा कि जैन परम्परा ने आज पूरे भारत की मूल आचार पद्धति को जीवित बना कर रखा है। **ह्न डॉ. अनेकान्त जैन**

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2008

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
सोमवार 18 फरवरी 2008	1. बालबोध पाठमाला भाग1 (बालबोध प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
मंगलवार 19 फरवरी 2008	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बालबोध द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 (प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
बुधवार 20 फरवरी 2008	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बालबोध तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्धयुपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।